



भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में आयुर्वेद दिवस का आयोजन

Celebration of Ayurveda Day at ICFRE-HFRI, Shimla

भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (HFRI), शिमला में 23 सितंबर, 2026 को आयुर्वेद दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य आयुर्वेद के प्रति जन-जागरूकता को बढ़ावा देना तथा स्वास्थ्य, कल्याण और सतत जीवन-शैली के प्रति इसके समग्र दृष्टिकोण को रेखांकित करना था। इस कार्यक्रम का व्यापक उद्देश्य आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अग्रणी स्थान दिलाने तथा इसके पारंपरिक ज्ञान एवं सिद्धांतों के प्रति जनसमझ को सुदृढ़ करना था। इस अवसर पर डॉ. निशा शर्मा, आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी, पंथाघाटी, शिमला को आयुर्वेद एवं समकालीन जीवन में इसकी प्रासंगिकता विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान देने हेतु स्रोत व्यक्ति के रूप में आमंत्रित किया गया। अपने संबोधन के दौरान उन्होंने आयुर्वेद की विशिष्ट विशेषताओं एवं इसके समग्र सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से निवारक स्वास्थ्य देखभाल, संतुलित जीवन-शैली तथा समग्र स्वास्थ्य एवं कल्याण पर आयुर्वेद द्वारा दिए जाने वाले महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने मानव स्वास्थ्य, प्रकृति तथा हमारे आसपास के पर्यावरण के मध्य सामंजस्य बनाए रखने के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की। व्याख्यान के दौरान स्वस्थ जीवन-शैली एवं सतत जीवन-पद्धतियों को बढ़ावा देने में पारंपरिक ज्ञान एवं प्राकृतिक संसाधनों की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डाला गया। मानव, वनस्पति, जीव-जंतु तथा पर्यावरण के बीच परस्पर संबद्धता पर चर्चा करते हुए वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के कल्याण के लिए जैव विविधता के संरक्षण तथा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के महत्व को रेखांकित किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य आयुर्वेद के प्रति विश्वास एवं विश्वसनीयता को बढ़ाना तथा सामुदायिक सहभागिता एवं ज्ञान-विनिमय के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में इसके प्रति जागरूकता का प्रसार करना था। कार्यक्रम के माध्यम से आम जनता, विद्यार्थियों, किसानों तथा अन्य हितधारकों को आयुर्वेद के सिद्धांतों, संभावित लाभों तथा स्वस्थ एवं सतत जीवन-शैली को बढ़ावा देने में इसकी प्रासंगिकता के बारे में जागरूक करने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का समापन भारत की समृद्ध पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण, संवर्धन एवं व्यापक प्रसार की आवश्यकता पर बल देते हुए किया गया। साथ ही, मानव कल्याण एवं पर्यावरणीय स्थिरता के लिए इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के जिम्मेदार एवं विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया गया।

Ayurveda Day was celebrated at the **ICFRE-Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla, on 23 September 2026** with the objective of promoting awareness about Ayurveda and highlighting its holistic approach towards health, well-being and sustainable living. The programme was organised with the broader aim of positioning Ayurveda at the global forefront of healthcare and strengthening public understanding of its traditional knowledge and principles. On the occasion, **Dr. Nisha Sharma, Ayurvedic Medical Officer, Panthaghati, Shimla**, was invited as the resource person to deliver an expert lecture on Ayurveda and its relevance in contemporary life. During her address, she highlighted the unique strengths of Ayurveda and its holistic principles, particularly its emphasis on preventive healthcare, balanced living and overall well-being. She elaborated on the importance of maintaining harmony among human health, nature and the surrounding environment. The lecture also highlighted the relevance of traditional knowledge and natural resources in promoting healthy lifestyles and sustainable practices. The interconnected relationship between human beings, plants, animals and the environment was discussed, emphasising the importance of conserving biodiversity and maintaining ecological balance for the well-being of present and future generations. The celebration was aimed at enhancing trust and credibility in Ayurveda and creating greater awareness among different sections of society through community engagement and knowledge-sharing. The programme provided an opportunity to sensitise general public, students, farmers and other stakeholders about the principles, potential benefits and relevance of Ayurveda in promoting healthy and sustainable living. The programme concluded with an emphasis on the need to preserve, promote and disseminate India's rich traditional knowledge systems while encouraging their responsible application for human well-being and environmental sustainability.

कार्यक्रम की झलकियाँ/Glimpses of the Activity


